फूलों की खेती से अच्छी आमदनी हो सकती है यदि कृषक सुनियोजित तरीके से खेती करे। यही सोच रखते हुये मैने एक वर्ष पहले फूलों की खेती को प्रयोग के तौर पर 6 बीसवा जमीन पर फूल (हजारें) की खेती प्रारम्भ की। आज मैं अपनी खेती में हजारे के अतिरिक्त अन्य फूल गुलदाउदी,नौरंगा उगा कर इनसे अधिक आमदनी प्राप्त कर रहा हूँ।

मैं हुकम चन्द सैनी संस्था द्वारा गठित किसान क्लब, पुराना राजगढ़ का सदस्य हूँ इस क्लब की स्थापना खेती एंव व्यवसाय की बढ़ोत्तरी हेतु की गई थी । क्लब की प्रत्येक माह मासिक बैठक होती है जिसमें कृषि की नवीन तकनीकी एंव आय वृद्वि के कार्यक्रम पर चर्चा हेाती है। मेरे गाँव में कम कृषि भूमि में गेहूँ /सरसों की खेती करने से आमदनी बहुत कम होती थी, परिणाम स्वरुप मेरी आर्थिक स्थिति कमजोर होने से में परेशान रहता था तथा कृषि को छोड़ने का मानस बना लिया। तभी संस्था के कृषि कार्यक्रम प्रभारी से मासिक बैठक के दौरान अपनी समस्या से अवगत कराया। मेरे पास संसाधनो को देखते हुये उन्होने मुझे सलाह दी कि परम्परागत खेती के बजाय अगर अधिक आय वाली फसलों का उत्पादन प्रारम्भ करे तो कृषि से आमदनी अधिक होगी,उन्होनें मुझे प्रारम्भ में उद्यान विभाग से हजारा का उन्नत किस्म का बीज एंव संस्थागत प्रशिक्षण दिलवाया, उस समय मैने 3 बीसवा भूमि में हजारा उत्पादन प्रारम्भ किया, उस भूमि पर मैं पूर्व में कोई उत्पादन नही ले रहा था ।

उस वर्ष मैने लगभग 7से 8 हजार रु0 के फूल स्थानीय मण्ड़ी में बेचे, जिससे मुझे अतिरिक्त लाभ मिला। मुझे समझ में आया कि फूल उत्पादन को बढ़ावा दिया जावे तो मेरी आमदनी में और अधिक बढ़ोत्तरी हो सकती है। अगले वर्ष मैने संस्था के सहयोग से नोरंगा की बुवाई की जिसका परिणाम मेरे लिये लाभकारी रहा। मैने कुल 6 बिस्वा भूमि से 35000/–रु0 की आमदनी अर्जित की। यह आमदनी मेरी मजदूरी के अतिरिक्त है। इससे अब मैं मेरे परिवार का पालन पोषण अच्छी प्रकार से कर रहा हूँ। मुझे माताश्री ने इस व्यवसाय के द्वारा नई दिशा प्रदान की है ।